Raga of the Month March 2022 Introduction to Murchana Principle

<u>हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतके मूर्च्छना प्रक्रियाकी जानकारी (कर्नाटक संगीतका ग्रहभेदम्)</u>

"MUSIC CONTEXTS- A concise Dictionary of Hindustani Music" इस किताबमे डॉ अशोक दा रानडेजीने मूर्च्छना प्रक्रियाकी व्याख्या इस प्रकार की है - "किसीभी स्वरसे आरम्भ करके क्रमशः सात स्वरोंकी अपने अनुक्रमके अनुसार आरोह या अवरोहमे की हुई रचना"। मूर्च्छनाकी कल्पना पाश्चिमात्य संगीतके की-मॉड्यूलेशन इस कल्पनासे कुछ कुछ मिलती जुलती है। मूर्च्छना प्रक्रियासे मूल रागके स्वरोंमे षड्ज संक्रमण करनेसे अलग अलग स्वर पंक्तियाँ मिलती हैं, जिनमेंसे नये रागोंका निर्माण किया जा सकता है।

मूर्च्छना प्रक्रियाका प्रत्यक्ष उपयोग हम एक उदाहरणकी मददसे समझ लेंगे। हम मालकौंस रागसे परिचित हैं। उसमे षड्ज, कोमल गांधार, मध्यम , कोमल धैवत और कोमल निषाद ये स्वर लगते हैं। षड्ज और कोमल गांधारमें तीन स्वरोंका अंतर है; कोमल गांधार और मध्यममें दो स्वरोंका अंतर है; मध्यम और कोमल धैवतमें तीन स्वरोंका अंतर है; कोमल धैवत और कोमल निषादमें दो स्वरोंका अंतर है; और कोमल निषाद और षड्जमें दो स्वरोंका अंतर है। मालकौंसकी पहली मूर्च्छना जाननेके लिए हमें मालकौंसके दूसरे स्वर कोमल गंधारको षड्ज मानना होगा। कोमल गंधार और मध्यममे दो स्वरोंका अंतर है। इस कारन मालकौंसका तीसरा स्वर मध्यम, पहली मूर्च्छनाका रिषभ बनेगा, इसी तरह मालकौंस का चौथा स्वर कोमल धैवत, पहली मूर्च्छनाका शुद्ध मध्यम बन जायेगा, मालकौंसका कोमल निषाद, पहली मूर्च्छनाका पंचम बनेगा, और मालकौंस का तार षड्ज, पहली मूर्च्छनाका शुद्ध धैवत बनेगा। अब मालकौंसकी पहली मूर्च्छनामें हमें षड्ज, शुद्ध रिषभ, शुद्ध मध्यम, पंचम और शुद्ध धैवत ऐसे स्वर मिलते हैं, जो राग दुर्गाके स्वर हैं। इसी प्रक्रियाको जारी रखते हुए मालकौंसकी दूसरी मूर्च्छनामें हमें धानिकौंसके स्वर मिलेंगे, तीसरी मूर्च्छनामें राग भूपालीके स्वर मिलेंगे और चौथी मूर्च्छनामें राग मधमाद सारंगके स्वर मिलेंगे।

नीचे दी हुई तालिकासे मूर्च्छना प्रक्रिया स्पष्ट हो जायेगी।

स्वर	S सा	r <u>रे</u>	R रे	g <u>ग</u>	G ग	M म	m मं	P प	d <u>ध</u>	D ध	n <u>नि</u>	N नि	S सा	r <u>रे</u>	R रे	g <u>ग</u>	G ग	M म	m मं	P प	d <u>ध</u>	D ध	n <u>नि</u>	N नि	मुख्य राग	मूर्च्छना प्रक्रियासे संशोधित राग *
मालकौंस	S			g		M			d		n		S			g		M			d					
मूर्च्छना१				S		R			M		P		D												दुर्गा	दुर्गा
मूर्च्छना२						S			g		M		P			n									धानी	धानी
मूर्च्छना३									S		R		G			P		D							भूपाली	भूपाली
मूर्च्छना४											S		R			M		P			n				मधमाद सारंग	मधमाद सारंग

(*मूर्च्छना प्रक्रियासे संशोधित राग इस कॉलम मे सुविधाके लिये एक राग नामही दिखाया है। व्यवहारमे मुख्य रागके सभी सम-स्वरी राग तथा प्रचलित राग नाम उस कॉलम मे प्रदर्शित होंगे।)

ऊपर दिए हुए उदाहरणसे हम समझ सकते हैं की औडव रागकी ४ मूर्च्छनाएँ होंगी; उसी हिसाबसे षाडव रागकी ५ और सम्पूर्ण रागकी ६ मूर्च्छनाएँ होंगी। ऊपर दिए हुए राग मालकौंसके उदाहरणमें हमें ४ मूर्च्छनाएँ मिली, जो किसी न किसी प्रचलित रागके स्वरोंसे मिलती जुलती थी। मगर दूसरे किसी रागकी हमें ऐसी मूर्च्छनाएँ मिल सकती हैं जो किसी प्रचलित रागके स्वरोंसे मिलती ना हों। प्रतिभावान कलाकार ऐसी मूर्च्छनाओंमेंसे किसी नए रागका सृजन कर सकते हैं।

नीचे दी हुई तालिकामे हम बिलावल रागकी मूर्च्छनाएँ देखेंगे।

स्वर	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	मुख्य राग	मूर्च्छना प्रक्रियासे संशोधित राग *
बिलावल	S		R		G	M		P		D		N	S		R		G	M		P		D		N		
मूर्च्छना१			S		R	g		M		P		D	n												काफी	काफी
मूर्च्छना२					S	r		g		M		P	d		n										भैरवी	भैरवी
मूर्च्छना३						S		R		G		m	P		D		N								यमन	यमन
मूर्च्छना४								S		R		G	M		P		D	n							झिंझोटी	झिंझोटी
मूर्च्छना५										S		R	g		M		P	d		n					जौनपुरी	जौनपुरी
मूर्च्छना६												S	r		g		M	m		d		n			x	x

मूर्च्छना पद्धतिका इस्तेमाल करके किसी नए रागका सृजन करनेकी प्रक्रियाके हम दो उदाहरण देख सकते हैं।

१) पंडित दिलीप चंद्र वेदीजीने सन १९२६ में राग पूरियाकल्याणकी मूर्च्छनाओंमेंसे राग वेदीकी ललित की रचना की थी। नीचे दी हुई तालिकासे हम यह प्रक्रिया समझ सकते हैं।

स्वर	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	मुख्य राग	मूर्च्छना प्रक्रियासे संशोधित राग *
पूरियाकल्याण	S	r			G		m	P		D		N	S	r			G		m	P		D		N	पूरियाकल्याण	पूरियाकल्याण
मूर्च्छना१		S			g		M	m		d		n	N												x	x
मूर्च्छना२					S		R	g		M		P	d	D											x	x
मूर्च्छना३							S	r		g		M	m	P			n								x	x
मूर्च्छना४								S		R		G	M	m			D		N						दीपावली	दीपावली
मूर्च्छना५										S		R	g	G			P		D	n					वेदीकी ललित	वेदीकी ललित
मूर्च्छना६												S	r	R			M		P	d		n			x	x

२) उसी तरह पंडित रवीशंकरजीने राग सरस्वतीकी मूर्च्छनाओंमेंसे गंगेश्वरी, रंगेश्वरी और परमेश्वरी इन रागोंका सृजन किया था। नीचे दी हुई तालिकासे हम यह प्रक्रिया समझ सकते हैं।

स्वर	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	मुख्य राग	मूर्च्छना प्रक्रियासे संशोधित राग *
सरस्वती	S		R				m	P		D	n		S		R				m	P		D	n		सरस्वती	सरस्वती
मूर्च्छना१			S				G	M		P	d		n												गंगेश्वरी	गंगेश्वरी
मूर्च्छना२							S	r		g	G		m		d										x	x
मूर्च्छना३								S		R	g		M		P				N						रंगेश्वरी	रंगेश्वरी
मूर्च्छना४										S	r		g		M				D	n					परमेश्वरी	परमेश्वरी
मूर्च्छना५											S		R		G				d	D		N			x	x

सोच विचार करके हरेक रागकी मूर्च्छनाओंका संशोधन करना यह थोड़ी कुछ दिमागी खटपट है और करनेमें बहुत समयभी खर्च करना पड़ता है। सॉफ्ट वेअर प्रोग्रॅमकी मददसे मूर्च्छना प्रक्रिया काफी आसान हो गयी है। (http://oceanofragas.com) इस संकेत स्थलमे **" Murchana Finder Table "** मेनूमे सिर्फ एक बटन दबानेसे हम किसीभी रागकी मूर्च्छनाओंके बारेमे जानकारी पा सकते हैं।

आजके ऑडिओमे पहले हम मूर्च्छनाप्रक्रियाका गायनमे प्रस्तुत किये हुए उदाहरण सुनेंगे। पहले पंडिता कौशिकी चक्रवर्तीसे राग मालकौंस की मूर्च्छनाएँ ; बादमे उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँसे राग बिलावलकी मूर्च्छनाएँ सुनेंगे और अन्तमे पंडित दिलीप चंद्र वेदीजीने गाया हुआ राग वेदीकी ललित सुनेंगे।

आभार- पंडित यशवंत महाले ; डॉ. विम फॅन डर मीर

०१-०३-२०२२

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx